फलीछेदक

लक्षणः फली मे छेद कर हानि पहुंचाते है।

नियंत्रण

कीट प्रकोप होने पर प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. को मि.ली./ली. पानी की दर से 500 ली. पानी/हे.की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

कटाई एवं गहाई

मटर की कटाई का कार्य फसल की परिपक्वता के पश्चात् करें। जब बीज मे 15 प्रतिशत तक नमी रहे उस स्थिति मे गहाई कार्य करना चाहिए।

उपज : उन्नत तकनीक से खेती करने से 20–22 क्विं. प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त हो सकती है ।

भण्डारण

मटर के बीज को अच्छे तरह से सूखाकर जब उसमे नमी 8–10 प्रतिशत रह जाये। तब बीज का भण्डारण सुरक्षित स्थान पर करें। मटर के बीज का भण्डार 1 से 2 वर्ष तक असानी से कर बुवाई हेतु उपयोग कर सकते है।

अधिक उपज प्राप्त करने हेतु प्रमुख पॉच बिन्दू :

पद्ध बीजोपचार – थायरम+ कार्बेन्डाजिम (2+1) 3 ग्राम/कि.ग्रा.बीज और थायोमिथोक्जाम 3 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें उसके बाद राइजोबियम एवं पी.एस.बी. कल्चर 5–10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित कर तुरंत बोवाइ करें ।

पपद्ध फसल की उत्पादकता बढाने के लिय पोटाश 60 कि.ग्रा. और सल्फर 20 कि.ग्रा./हे. बुवाई के समय प्रयोग करें।

पपपद्ध फसल में शाखा बनते समय और फूल आने के पूर्व स्प्रिंकलर से हल्की सिंचाई करें।

पअद्ध पाला से फसल को बचाने के लिये घुलनशील सल्फर 80 डब्लू पी 2ग्राम/लीटर + बोरोन 1 ग्राम/लीटर का घोल बनाकर छिडकाव करे। (1) मटर का भभूतिया रेाग निरोधक उन्नत किस्में –प्रकाश, आई.पी.एफ.डी.99–13, आई.पी.एफ.डी.1–10, जी.एम. – 6, मालवीय –13, 15, वी.एल. मटर–42, वी.एल. मटर–47, आई.पी.एल.–4–9, पंत मटर–14, पारस, के.पी.एम.आर. 400 (इन्द्रा), अमन, गोमती (टी.आर.सी.पी.–8), एच. एफ.पी.–529, एच.एफ.पी.–715 किस्मों का चुनाव क्षेत्र विशेष की अनुकूलता के आधार पर करें ।

- फसल में रोग आने पर घुलनशील सल्फर 3–4 ग्राम प्रति ली. या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम प्रति ली. की दर से 500 ली. प्रति हे.पानी में घोल बना कर छिड़काव करें
- तकनीकी जानकारी हेतु अपने जिले / नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र से संपर्क करें।
- भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा फसल उत्पादन (जुताई, खाद, बीज, सूक्ष्म पोषक तत्व, कीटनाशी, सिंचाई के साधनो), कृषि यन्त्रों, भण्डारण इत्यादि हेतु दी जाने वाली सुविधाओं/अनुदान सहायता/ लाभ की जानकारी हेतु संबधित राज्य /जिला/ विकास खण्ड स्थित कृषि विभाग से संपर्क करें।

अधिक जानकारी हेतु देखे

एम-किसान पोर्टल– http://mkisan.gov.in
फार्मर पोर्टल- http://farmer.gov.in
किसान कॉल सेन्टर- टोल फ्री 1800–180–1551

लेखन एवं संपादन
डॉ ए. के. तिवारी
डॉ ए. के. शिवहरे
श्री विपिन कुमार

तकनीकी सहयोग
डॉ. संदीप सिलावट
श्री सरजू पल्लेवार
सुश्री दिव्या सहारे
श्रीमति अश्विनी भौंवरे
श्री सतीश द्विवेदी

प्रकाशक
निदेशक
दलहन विकास निदेशालय
भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि, सहकारिता एव किसान कल्याण विभाग
छठी मंजिल, विन्ध्याचल भवन
भोपाल–462 004 (म.प्र.) ई–मेल: dpd.mp@nic.in
फेक्स: 0755-2571678, दूरभाष: 0755-2550353/ 2572313

इफको खाद में है ये दम, उपज बढ़े और लागत कम

IFFCO 50 1967 2017 पूर्णतः सहकारी स्वामित्व Wholly owned by Cooperatives स्वर्ण जयंती Golden Jubilee

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड
मंडल कार्यालय (पश्चिम) एवं राज्य कार्यालय–मध्यप्रदेश
ब्लाक–2, तृतीय तल, ''पर्यावास'', अरेरा हिल्स, भोपाल–462011
दूरभाष 0755–2554650, 2555883, 4036217, फैक्स–2553903
वेबसाइट : http://www.iffco.in, Email: smm_bhopal@iffco.in

क्षेत्रीय कार्यालय

ग्वालियर ओ–5, साइड–1, सिटी सेंटर, ग्वालियर–474011 दूरभाष: 0751–2232557	इन्दौर डब्ल्यू. बी–54 फ्रंट फ्लोर स्कीम नं. 94, सेक्टर बी आम्बे हॉस्पिटल सर्विस रोड, नियर न्यू ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल इन्दौर दूरभाष: 0731–2551375	जबलपुर 2998, आदर्श नगर, नर्मदा रोड, जबलपुर दूरभाष: 0761–2664372
उज्जैन 159, महाश्वेता नगर, उज्जैन दूरभाष: 0734–2511126 2526430	होशंगाबाद 70, रूद्र एंक्लेव, मालाखेड़ी रोड, कलेक्टर बंगला के सामने होशंगाबाद–461001 दूरभाष: 07574–277099	रीवा न्यू दैनिक जागरण प्रेस के पास, उर्रहाट (गांधी नगर), रीवा दूरभाष: 07662–254094

एम-किसान पोर्टल– http://mkisan.gov.in
फार्मर पोर्टल- http://farmer.gov.in
किसान कॉल सेन्टर- टोल फ्री 1800–180–1551

मुद्रक : कृषक जगत प्रींटिग वर्क्स, भोपाल, दूरभाष : 9826255861

मटर उत्पादन तकनीक

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि, सहकारिता एव किसान कल्याण विभाग
दलहन विकास निदेशालय
छठी मंजिल, विन्ध्याचल भवन

SOIL HEALTH CARD
स्वस्थ धरा, खेत हरा

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Per Drop, More Crop

IFFCO 50 1967 2017 पूर्णतः सहकारी स्वामित्व Wholly owned by Cooperatives स्वर्ण जयंती Golden Jubilee

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड
मंडल कार्यालय (पश्चिम) एवं राज्य कार्यालय–मध्यप्रदेश
ब्लाक–2, तृतीय तल, ''पर्यावास'', अरेरा हिल्स, भोपाल–462011
दूरभाष 0755–2554650, 2555883, 4036217, फैक्स–2553903
वेबसाइट : http://www.iffco.in, Email: smm_bhopal@iffco.in

मटर

मटर की खेती सब्जी और दाल के लिये उगाई जाती है। मटर दाल की अवशयकता की पूर्ति के लिये पीले मटर का उत्पादन करना अति महत्वपूर्ण है, जिसका प्रयोग दाल एवं बेसन के रूप में अधिक किया जाता है । पीला मटर की खेती वर्षा आधारित क्षेत्र में अधिक लाभप्रद है।

फसल स्तर

मटर विश्व मे बिन व चने के बाद तीसरी मुख्य दलहन फसल है और भरत मे रबी दलहन मे चना व मसूर के बाद तीसरी मुख्य फसल है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व मे चौथे स्थान (10.53:) व उत्पादन मे पाँचवे (6.96%) स्थान पर आता है। (FAO Stat., 2014).

12वीं पंचवर्षीय योजना (2012–2015) मे मटर का कुल क्षेत्रफल 11.50 लाख हे. व उत्पादन लगभग 10.36 लाख टन है। उतर प्रदेश मुख्य मटर की खेती करने वाला राज्य है। यह अकेला लगभग 49 प्रतिशत भागीदारी मुल उत्पादन मे रखता है। उतर प्रदेश के अतिरिक्त मध्य प्रदेश, बिहार व महाराष्ट्र राज्य मुख्य मटर उत्पादक राज्य हैं। (DES, 2015-16)

• राज्यवार प्रमुख प्रजातियों विवरण

No.	राज्यप्र	जातियॉ
1.	महाराष्ट्र	जे.पी. 885, अंबिका, इंद्रा(के.पी.एम.आर.–400), आदर्श (आई.पी. एफ.99–25), आई.पी.एफ.डी. 10–12
2.	गुजरात	जे.पी. 885, आई.पी.एफ.डी. 10–12 इन्द्रा, प्रकाश
3.	पंजाब	जय (के.पी.एम.आर.–522), पंत मटर–42, के.एफ.पी. –103, उत्तरा (एच.एफ.पी. 8909) अमन (आई.पी.एफ. 5–19)
4.	हरियाणा	उत्तरा (एच.एफ.पी.–8909), डी.डी.आर.–27 (पूसा पन्ना), हरीयाल (एच.एफ.पी.–9907 बी), अलंकार, जयंती (एच.एफ.पी. –8712) (आई.पी.एफ. 5–19)
5.	राजस्थान	डी.एम.आर.–7 (अलंकार), पंत मटर–42
6	मध्यप्रदेश	प्रकाश (आई.पी.एफ.डी.1–10), विकास (आई.पी.एफ.डी.99–13)
7.	उत्तरप्रदेश	स्वाती (के.पी.एफ.डी. –24), मालवीय मटर (एच.यू.डी.पी.–15), विकास, सपना, (के.पी.एम.आर.–1441), आई.पी.एफ. 4–9
8.	बिहार	डी.डी.आर.–23 (पूसा प्रभात) वी.एल. मटर 42
9.	छत्तीसगढ़	शुभ्रा (आई.एम.–9101), विकास (आई.पी.एफ.डी.99–13),पारस, प्रकाश

स्त्रोतः– सीडनेट, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय , भारत सरकार एवं भा.द.अनु.सं.–भा.कृ.अनु.प., कानपुर।

उपज अन्तर

सामान्यतः यह देखा गया है कि अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन की पैदावार व स्थानी किस्मों की उपज में लगभग 24 % का अन्तर है। यह अन्तर कम करने के लिये अनुसंधान संस्थानों व कृषि विज्ञान केन्द्र की अनुशंसा के अनुसार उन्नत कृषि तकनीक को अपनाना चाहिए।

राज्यवार प्रमुख प्रजातियों की अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत पैदावार निम्न तालिका में दर्शायी गयी है–

राज्य	प्रयुक्त प्रजाति उन्नत	स्थानी किसान उपज	उपज ;कि.ग्रा./हे. उपज	प्रतिशत उन्नत किसान उपज	अधिक (लोकल से)
बिहारएच.	यू.डी.पी–15	स्थानीय	1960	1602	22.35
	डी.डी.आर.–23		1523	1264	20.49
छततीसगढ.	अंबिका	स्थानीय	1044	760	37.37
	रचना		1002	733	36.70
	जे.एम.–6		883	714	23.67
.उत्तर प्रदेश	एच.यू.डी.पी–15	स्थानीय	1376	1135	21.23
	आई.पी.एफ.99–25		1263	1135	11.28
	मालवीय मटर		1889	1348	40.13
	डी.पी.एल.–62		1458	1146	27.23
	के.पी.एम.आर.–522		2134	1783	19.69
	के.पी.एम.आर.–400		1842	1657	11.16
जम्मू कश्मीर	प्रकाश	स्थानीय	550	500	10.00
	रचना		826	685	20.57
त्रिपुरा	एच.यू.डी.पी–15	स्थानीय	1192	1290	–7.56
	टी.आर.सी.पी. 8	–	1641	1445	13.53
उत्तराखंड	पंत मटर–42	स्थानीय	541	355	52.39
मणिपुर	रचना	स्थानीय	826	719	14.88

स्त्रोतः भा.द.अनु.सं.–भा.कृ.अनु.प., कानपुर, वर्ष 2007–08 से 2011–12 का औसत

भूमि का चुनाव

मटर की खेती सभी प्रकार की भूमियों में की जा सकती है परंतु अधिक उत्पादन हेतु दोमट और बलुई भूमि जिसका पी.एच.मान. 6–7.5 हो तो अधिक उपयुक्त होती है।

भूमि की तैयारी

खरीफ फसल की कटाई के पश्चात एक गहरी जुताई कर उसके बाद दो जुताई कल्टीवेटर या रोटावेटर से कर खेत को पाटा चलाकर समतल और भुरभुरा तैयार कर लें । दीमक, तना मक्खी एवं लीफ माइनर की समस्या होने पर अंतिम जुताई के समय फोरेट 10जी 10–12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर खेत में मिलाकर बुवाई करें ।

बुआई का समय : 15 अक्टुबर से 15 नवम्बर

बीज की मात्रा : उंचाई वाली किस्म – 70–80 कि.ग्रा./हे.
बौनी किस्मे – 100 कि.ग्रा./हे.

बुआई की विधिः बुवाई कतार में नारी हल, सीडड्रिल, सीडकमफर्टीड्रिल से करें।

बोने की गहराई : 4 से 5 से.मी.

कतार से कतार एवं पौधों से पौधों की दूरी : उंचाई वाली किस्म 30–45 से.मी.
बौनी किस्म 22.5–10 से.मी.

बीजोपचार

बीज जनित रोगों से बचाव हेतु फफूंदनाशक दवा थायरम + कार्बन्डाजिम (2+1) 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज और रस चूसक कीटों से बचाव हेतु थायोमिथाक्जाम 3 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज दर से उपचार करें उसके बाद वायुमण्डलीय नत्रजन के स्थिरीकरण के लिये राइजोबियम लेग्यूमीनोसोरम और भूमि में अघुलनशील फास्फोरस को घुलनशील अवस्था में परिवर्तन करने हेतु पी.एस.वी. कल्चर 5–10 ग्रा./कि.ग्रा. बीज की दर से उपचार करें । जैव उर्वरकों को 50 ग्राम गुड को आधा लीटर पानी में गुनगुना कर ठंडा कर मिलाकर बीज उपचारित करें ।

उर्वरक प्रबंधन

उँचाई वाली किस्मो के लिए नत्रजन की मात्रा 20–30 कि.ग्र./हे. व बोनी किस्मो के लिए 40 कि.ग्रा. नत्रजन/हे. आधार उर्वरक के रूप में देना चाहिए। फास्फोरस व पोटाश की मात्रा को भी आधार उर्वरक के रूप में मृदा परिक्षण के आधार पर देना चाहिए। अगर मृदा मे फास्फोरस व पोटाश की कमी हो तो उँचाई वाली किस्मो के लिए 40 कि.ग्रा./हे. फास्फोरस व बोनी किस्मों के लिए 40–60 कि.ग्रा./हे. फास्फोरस देना चाहिए तथा पोटाश की मात्रा 20–30 कि.ग्रा. व सल्फर 20 कि.ग्रा. /हे. की दर से देना चाहिए। सभी उर्वरकों के मिश्रण को कतार से 4–5 से.मी. दुरी पर व बीज से नीचे देना चाहिए। जिन मृदाओं मे जिंक की कमी हो उन मृदाओं में 15 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हे. देना चाहिए।

सिंचाई

मृदा में उपलब्ध नमी व शरद कालीन वर्षा के आधार पर फसल को 1–2 सिंचाई की आवश्यकता प्रारम्भिक अवस्था मे होती है। प्रथम सिंचाई 45 दिन पर व दुसरी सिंचाई अगर आवश्यक हो तो फली भरते समय करना चाहिए ।

खरपतवार नियंत्रण

फसल में निंदा की समस्या होने पर व्हील हो या हेण्ड हो द्वारा नींदाई करे जिससे फसल की जड़ क्षेत्र मे वायु संचार बढ़ जाता है और खरपतवार नियंत्रित होने से पौधे में भाखाऐं और उत्पादन में वृद्धि होती है।

दवा का नाम	दवा की व्यापारिक मात्रा	उपयोग का समय विधि	उपयोग करने की
पेण्डीमैथलीन	2.5–3 लीटर /हे. (0.75–1.00 कि.ग्रा./हे. सकिय तत्व)	बुवाई से 1 से 3 दिन के अंदर छिड़काव करें	500 ली.पानी/हे. की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
मेट्रीव्यूजीन 70 प्रतिशत डब्लू पी.	0.350 लिटर/हे (250 ग्रम/हे. सकिय तत्व)	बुवाईके 15–20 दिनं बाद छिडकाव करें ।	

रोग नियंत्रण हेतु

भभूतिया रोग (पावडरी मिल्डयू)

लक्षणः पत्तियों एवं शखाओं पर सफेद चूर्ण जैसा पदार्थ दिखाई देते है।

नियंत्रण 1. देरी से बुवाई नहीं करना चाहिए; 2. कटाई के बाद फसल अवशेष को नष्ट कर देना चाहिए; 3. जिस क्षेत्र में बिमारी प्रायः आती है वहाँ जल्दी पकने वाली किस्मों का चयन करना चाहिए; 4.रोग नियंत्रण के लिए वेटेबल सल्फर (0.3:) या केराथेन (0.05:) या कार्बेन्डाजिम (0.05:) का छिडकाव करें। पहला छिडकाव बिमारी दिखने पर करे तथा दूसरा छिडकाव पहले छिडकाव के 14 दिन बाद करें इसके बाद अगर जरूरत हो तो तीसरा छिडकाव करें।

कीट नियन्त्रण माहू

लक्षणः पत्ती, फूल एवं फलियों से रस चूसते है।

नियंत्रणः इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस.एल.की 0.2मि.ली./ली.पानी की दर से छिड़काव करे।

स्टेम फ्लाई एवं लीफ माइनर नियंत्रण

खेत की तैयारी के समय फोरेट 10 जी से मृदा उपचार 10 कि.ग्रा./हे. की दर से प्रयोग करना चाहिए । खडी फसल मे ट्राईजोफॉस 40 ई.सी. 2 मि.ली./ली. . पानी का घोल बनाकर छिडकाव आवश्यकतानुसार करना चाहिए।